शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भगवानदास मोरवाल के उपन्यासों में ग्रामीण जीवन

नेहा गुप्ता (शोधार्थी)
भाषा अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

महात्मा गाँधी ने कहा है भारत की आत्मा गाँव में बसती है। हमें भारत को जानना हे तो भारत के गाँव को जानना होगा। साहित्य समाज का वास्तविक चेहरा हमारे सामने प्रस्तुत करता है अतः भारत के ग्रामीण जीवन से परिचय प्राप्त करने का सर्वश्रेष्ठ माध्यम ग्रामीण जीवन के साहित्य का अध्ययन करना है। साहित्य की विविध विधाओं में उपन्यास विधा का फलक सबसे व्यापक है एवं यही विधा यथार्थ के सबसे नजदीक है। उपन्यास एक ऐसी विधा है जो किसी भी परिवेश अथवा समाज का सम्पूर्ण चित्रण करने में समर्थ है। औदात्यवादी कथानक, नायक की धारणा को तोड़ते हुए सबसे पहले प्रेमचंद साहित्य की मशाल को भारत के गाँवों में ले गये। प्रेमचंद के बाद ग्राम जीवन को आधार बनाकर उपन्यास लिखने की एक परम्परा-सी चल पड़ी, किंतु पूर्णतः अंचल केन्द्रित उपन्यास लेखन की परंपरा फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास मैला आंचल से प्राप्त होती है। नागार्जुन, राही मासूम रजा, शिवप्रसाद सिंह, रांगेय राघव, उदयशंकर भट्ट से हस्तांतरित होते हुए ग्राम्य जीवन को चित्रित करने की यह परम्परा समकालीन लेखकों तक पहुँची। इस परम्परा की नवीनतम कड़ी हैं उपन्यासकार भगवानदास मोरवाल का रचना संसार। प्रस्तुत शोध पत्र में उनकी रचनाधर्मिता पर विचार किया गया है।

व्यक्तित्व एवं कृतित्व

अपने लेखन के माध्यम से लोकमानस की अनुकृतियों को उकेरने वाले कथाकार भगवानदास मोरवाल के उपन्यास ने उन्हें साहित्य में अलग पहचान दी है। मोरवाल जी का जन्म 23 जनवरी 1960 को जिला मेवात, हरियाणा के छोटे से कस्बे नगीना में अत्यंत पिछडे, मजदूर परिवार में हुआ। मोरवाल को अनेक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मानों से नवाजा जा चुका है। मोरवाल के उपन्यास 'काला पहाड़', 'बाबल तेरा देस में', 'रेत', 'नरक मसीहा', तथा 'हलाला' हैं। उपन्यासों के अलावा मोरवाल के छह कहानी संग्रह और एक कविता संग्रह भी प्रकाशित हो चुके हैं। मेवात की संस्कृति, सभ्यता, से मोरवाल का मन रचा-बसा है। उपर्युक्त उपन्यासों में से काला पहाड़, बाबल तेरा देस में, रेत, में मेवात (हरियाणा), राजस्थान तथा उत्तरप्रदेश का चित्रण दिखाई देता है। मोरवाल अपने उपन्यासों में लगभग अछूते विषय को उठाते हैं और फिर गहन शोध के बाद उसको पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। मोरवाल का बहुत गहरा लगाव अपनी सांस्कृतिक धरोहर के प्रति है। मेवात की बड़ी गहरी सांस्कृतिक और रचनात्मक पहचान उनको हैं।

उपन्यासों में ग्राम्य जीवन

भगवानदास मोरवाल के उपन्यास काला पहाड़, बाबल तेरा देस में, और रेत में ग्राम्य जीवन का चित्रण मिलता हैं।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भगवानदास मोरवाल के 'काला पहाड़' की कथा हरियाणा राज्य के मेवात क्षेत्र के एक गाँव 'नगीना' को केन्द्र में रखकर लिखी गई है। मेवात क्षेत्र उत्तरप्रदेश, राजस्थान और हरियाणा तीनों के सीमांत पर काले पहाड़ की छाया में बसा है। 'नगीना' एक गाँव नहीं, पूरी मेवाती संस्कृति का प्रतीक है। यहाँ न कोई हिन्दू है, न मुसलमान, सब मेवाती हैं। पर्व, त्योहार, जीवन-मरण, शादी-ब्याह, यह सब कुछ सबका है।

सावन के समय गाया जाने वाला लोक गीत

पाँच सुपारी मेरे हाथ
बामण बूझण मैं चली
कह बमणा मेरे मन की बसी बात
कद बगदेगो मेरो सायबा ?

सांझी संस्कृति की यह गौरवपूर्ण परम्परा हसन खाँ मेवाती (जिसने 1527 ई. में खानवा के युद्ध में न केवल बाबर का साथ देने से इनकार कर दिया था, वरन राणा साँगा के साथ रहकर उससे युद्ध भी किया था।) से लेकर देश के स्वतंत्र और विभाजित होने तक चली आई थी। देश के स्वतंत्र होने के बाद, इस क्षेत्र का विकास तो दूर, चुनाव की कुत्सित राजनीति के चलते यहाँ की साझी संस्कृति में भी दरार पड़ गई है। 'सलेमी' इस उपन्यास का केन्द्रीय पात्र है। उसकी मृत्यु के साथ उपन्यास का समाप्त होना इस बात का सूचक है कि अब इस गौरवपूर्ण संस्कृति की भी मृत्यु हो गई है। मेवाती लोक-संस्कृति के सघन और सजीव चित्रण तथा मेवाती भाषा के सार्थक प्रयोग के बावजूद 'काला पहाड' मात्र एक आंचलिक उपन्यास नहीं है। 'नगीना' गाँव में हम देश के सभी गावों का चेहरा देख सकते हैं। 'काला पहाड़' समकालीन भारतीय समाज की प्रदूषित मानसिकता को बिम्बित करने वाला श्रेष्ठ उपन्यास है।

'बाबल तेरा देश' में भगवानदास मोरवाल का स्त्री विमर्श के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण उपन्यास है। पूर्वी राजस्थान तथा हरियाणा के सीमान्त क्षेत्र मेवात के एक छोटे से कस्बे वीरपुर गाँव के जनजीवन को उपन्यास का विषय वस्तु बनाया है। समूचा उपन्यास जहाँ एक और स्त्री की दारूण दशा प्रस्तुत करता हैं। वहीं दूसरी और उसके व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों को सशक्त रूप में दादी जैतूनी, शकीला, पारो, मुमताज, तथा बत्तो जैसे पात्रों के रूप में स्थापित करता है। इस उपन्यास की कथावस्तु इस प्रकार बुनी गई है कि मुस्लिम समाज की स्त्रियों की यातना एक सिरे से दूसरे सिरे तक व्याप्त दिखाई देती है। इस करुण गाथा को मोरवाल ने जीवंत पात्रों के द्वारा अद्भुत कथा संसार में बदल दिया है। मोरवाल ने यह महसूस किया है कि हमारे धर्मग्रंथ भी पुरूष वर्चस्व का ही समर्थन करते हैं। रेत उपन्यास में भगवानदास मोरवाल ने राजस्थान और हरियाणा के सीमावर्ती क्षेत्रों में बसने वाली कंजर जनजाति के जीवन-संघर्ष और द्वंद्व को उभारने की कोशिश की है। कंजर जनजाति के इतिहास, रीति-रिवाजों और उनके सामाजिक जीवन का प्रमाणिक चित्रण करने के लिए मोरवाल ने बडे. परिश्रमपूर्वक शोध किया है। आजादी के बाद भी तथाकथित सभ्य समाज के धनी मानी और बाहुबली लोगों द्वरा तथा सर्वोपरि पुलिस द्वारा इन जनजातियों का नृशंस दमन जारी रहा। उनके चरित्र पर लगा धब्बा अभी भी नहीं मिटा और न ही उनके प्रति समाज का दृष्टिकोण बदला। उपन्यासकार ने इस उपन्यास में दिखाया है कि कंजर जनजाति का मुख्य पेशा अवैध शराब बनाना और अपने समाज की कुँवारी लड़कियों द्वारा वेश्यावृत्ति कराना ही रहा है। इसके साथ ही यथावसर चोरी

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

और नकबजनी के अपराध भी उनके पेशे में शुमार किये जाते हैं। मेवों की संस्कृति और रीति-रिवाज में हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों के मिले-जुले रीति-रिवाज रहे हैं। वैसे ही कंजर जनजाति में भी हिन्दू और मुसलमान दोनों मिलते हैं।

इस उपन्यास के केन्द्र में है माना गुरू और माँ नलिन्या की कंजर और उसका जीवन। कंजर यानी काननचर अर्थाथ जंगल में घूमने वाला। अपने लोक विश्वासों व लोकाचारों की धुरी पर अपनी अस्मिता और अस्तित्व के लिए संघर्ष करती एक विमुक्ति जनजाति। गाजूकी और इसमें स्थित कमला सदन के बहाने यह कथा ऐसे दुर्दम्य समाज की कथा है जिसमें एक तरफ कमला बुआ, सुशीला, मामा, रूक्मिणी, वन्दना, पूनम हैं तो दूसरी तरफ हैं संतों और अनिता भाभी 'बुआ' यानि कथित सभ्य समाज के बरअक्स पूरे परिवार की सर्वेसर्वा, या पितृसत्तात्मक व्यवस्था में चुपके से सेंध लगाते मातृसत्तात्मक वर्चस्व का पर्याय और गंगा नहाने का सुपात्र। रेत भारतीय समाज के उन अनकहे, अनसुलझे अंतर्विरोधों, वटों की कथा है, जो घनश्याम 'कृष्ण' उर्फ वैद्यजी की 'कुत्तो फेना' साइकिल के करियर पर बैठ गाजूकी नदी के बीहडों से होती हुई आगे बढ़ती है। यह सफलताओं के शिखर पर विराजती रूक्मिणी कंजर का ऐसा लोमहर्षक आख्यान है जो अभी तक इतिहास के चौखटों व हदों को तोड़ता हुआ इस विमर्श के एक नये अध्याय की शुरूआत करता है।

निष्कर्ष

इस प्रकार भगवानदास मोरवाल ने मेवात की संस्कृति को केन्द्र में रख कर वहाँ के ग्रामीण जीवन के हर एक पहलू को अपने उपन्यास के माध्यम उजागर किया है। ग्रामीण जीवन का कोई भी रंग चाहे वह धर्म, समाज, जाति, तिज-त्यौहार, लोक परम्परा, लोक गीत, संस्कृति उनकी नजर से ओझल नहीं हो पाया है। यही कारण है कि उनके उपन्यासों को पढ़ते समय मेवात अंचल मूर्त हो उठता है। मेवात अंचल की संस्कृति एवं समाज को गहराई से समझने के लिए भगवानदास मोरवाल के उपन्यास सर्वाधिक प्रमाणिक दस्तावेज है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1 काला पहाड़, भगवानदास मोरवाल
2 बाबल तेरा देस में, भगवानदास मोरवाल
3 रेत, भगवानदास मोरवाल
4 हिन्दी उपन्यास का साहित्य, गोपाल राय
5 हिन्दी गद्य साहित्य का इतिहास, डॉ..रामचंद्र तिवारी